● **सुनो, समझो और पढ़ो :**

३. दादी माँ का परिवार

– रमाकांत 'कांत'

जन्म : २५ अक्तूबर १९४९, खंडेला (उ. प्र.) **रचनाएँ :** एक तेरे बिना, सुनो कहानी, सरस बाल कथाएँ, जंगल की कहानियाँ, परिश्रम का वरदान, सूझ-बूझ की कथाएँ आदि । **परिचय :** रमाकांत 'कांत' जी की रचनाएँ सुप्रतिष्ठित बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं ।
प्रस्तुत कहानी में लेखक ने यह बताया है कि संकट के समय शांति, एकाग्रता, धैर्य और एकता के साथ कार्य संपन्न करने चाहिए ।

जरा सोचो .... बताओ

यदि प्राकृतिक संसाधन समाप्त हो जाएँ तो...... जैसे- जल, वन आदि ।

एक छोटे-से घर में दादी माँ रहती थीं । यों तो वह निपट अकेली थीं फिर भी घर आबाद था उनका । रोज सुबह दादी माँ उठतीं । घर बुहारतीं-सँवारतीं । आँगन में आसन धरतीं, खाना बनातीं, खातीं । परिवारजनों से बतियातीं । रात होती, सो जातीं । दिन मजे में गुजर रहे थे । परिवारजन फल-फूल रहे थे ।

अब सुनो परिवार की कहानी । दादी माँ थीं- समझदार, सयानी । घर के आँगन में बरगद का पेड़ था । उसपर घोंसला बना था । घोंसले में रहती थी चिड़िया । वह दादी माँ की थी संगिया । चिड़िया का नाम था नीलू । सुबह उठ दादी आँगन बुहारतीं । नीलू फुदकती-चिंचियाती । दादी माँ से बतियाती ।

एक और थी दादी माँ की साथिन-चिंकी चुहिया । पेड़ के नीचे बिल बनाकर रहती । दिन भर घर में उसकी दौड़ लगती । यह थी दादी माँ की दीन-दुनिया । दादी माँ, चिड़िया और चुहिया । वे सब यदि होतीं खुश, तो दादी माँ भी रहतीं खुश । दादी माँ हुईं कभी दुखी तो वे भी नहीं रहती थी सुखी ।

ठंडी के दिन थे । उन्हीं दिनों नीलू चिड़िया ने अंडे दिए । उनमें से निकले दो बच्चे । नन्हे, सुंदर, अच्छे-अच्छे । टीनू-मीनू नाम निकाला । सबने मिलकर पोसा-पाला । चिंकी को दो बेटों के उपहार मिले । चुसकू-मुसकू थे बड़े भले । दादी माँ उनका खयाल रखतीं । उनसे मन बहलातीं । स्नेह-प्यार से वह दुलारतीं । रोने लगते तो पुचकारतीं । चारों बच्चे घर-आँगन में दौड़ लगाते । हँसते-खेलते और खाते-गाते ।

खेल-खेल में वे लड़ भी पड़ते । दादी माँ उन्हें समझातीं । कहतीं, 'मेरे बच्चो, मत लड़ो । झगड़े-टंटों में मत पड़ो । तनिक एकता का ध्यान धरो । सब मिलकर रहा करो । तब ही तो कहते हैं, 'एकता है जहाँ, खुशहाली है वहाँ ।' यों दिन कट रहे थे हँसी-खुशी से । परिवार में सब रह रहे थे खुशी-खुशी से । दादी माँ रोज उन्हें समझातीं । एकता के उनको लाभ गिनातीं ।

एक बार संकट आ गया । चिड़ियों में मातम छा गया । नीलू दाना चुगने चली गई । संग बच्चों को भी ले गई । अन्य चिड़े-चिड़ियाँ भी थे उसके साथ, खलिहानी में धान उगे हुए थे रात । सूरज की किरणें ढल रही थीं । चिड़ियाँ दाना चुग रही थीं । अचानक

❑ कहानी के किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । इसकी प्रमुख घटनाओं पर चर्चा कराएँ । विद्यार्थियों को कहानी उनके शब्दों में कहने के लिए प्रेरित करें । उन्हें सुनी हुई अन्य कहानी कक्षा में सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें ।

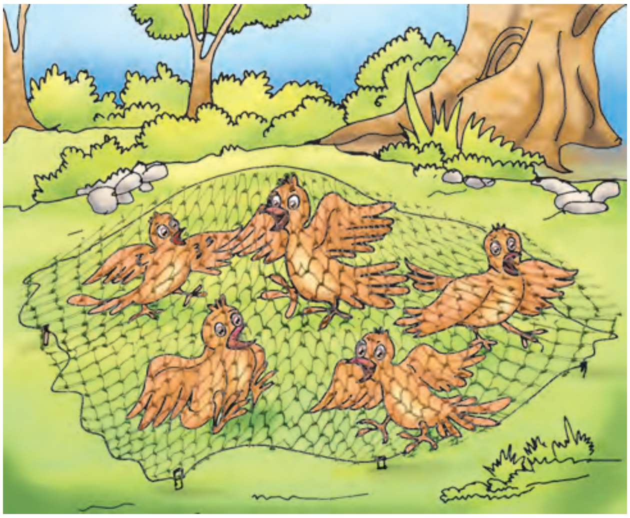

मुनमुन को ध्यान आया। उसने सबको बतलाया। सासू माँ आने वाली हैं। घोंसले में कोई नहीं, वह खाली है।

घर जाने की उसने विदा ली। सबसे 'टाटा-टाटा, बाय-बाय' कर ली। अब वह उड़ने को हुई। बेचारी उलझकर रह गई। ''अरे! मैं फँस गई'', वह चिल्लाई। नीलू ने उसकी पुकार सुनी। दूसरी चिड़ियों ने भी बात सुनी। नीलू उसके पास जाने लगी, पर उसकी भी रही बेचारगी। तब वह बात समझ पाई, फिर चिंचियाकर चिल्लाई। बोली, ''अरे, हम सब उलझ गए हैं। बहेलिए के जाल में फँस गए हैं।'' बहुतेरे उन्होंने यत्न किए। निकल न सके, उलझ गए। चिड़े-चिड़ियाँ हुए उदास। खत्म हुई घर जाने की आस। सभी के हो रहे थे हाल-बेहाल। आ रहा था, बच्चों का खयाल। बुरी बातें वे सोचने लगे। सिसक-सिसककर रोने लगे। नीलू-टीनू-मीनू थे एकदम शांत। हालाँकि चिंता से थे वे भी क्लांत। फिर दादी माँ की सीख सुनाई। दी उन्हें एकता की दुहाई। मुनमुन थी उनकी हमजोली। तुनककर वह यों बोली, ''हममें एकता है, लड़ नहीं रहे हैं। हार गए हैं, जाल में फँसे हुए हैं। चाहे कितनी भी एकता रखो। क्या धरा है, जब कुछ कर न सको।''

टीनू बोली, ''बस, इतने में ही डर गई ? हम जरूर जीत जाएँगे, एकता की ताकत दिखाएँगे।'' मुनमुन बोली, ''आखिर चाहते हो कैसी एकता ? तनिक खोलो अपनी अक्ल का पत्ता।'' टीनू ने समझाई युक्ति।

सुनो तो जरा

सुने हुए चुटकुले, हास्य प्रसंगों को पुनःस्मरण करके सुनाओ।

उससे मिल सकती थी मुक्ति। योजना सबके मन को भाई। उसमें थी सबकी भलाई। टीनू बोली, ''मीनू कहेगी-एक, दो, तीन, चार। उड़ने को रहेंगे तैयार। हम एक साथ उड़ पड़ेंगे। एक ही दिशा में चलेंगे।''

सब हो गए होशियार। उड़ने को थे वे तैयार। मीनू बोली, ''एक, दो, तीन, चार।'' उड़ चले सब पंख पसार। जाल सहित वे उड़ लिए। मन में आशा और विश्वास लिए। गजब एकता थी उन सबमें। उमंग हिलोरें ले रही थीं मन में।

बहेलिया ठगा-सा रह गया। सोच रहा था, 'पंछियों ने यह किया ?' क्या करता वह बेचारा ? एकता के आगे था हारा। चिड़े-चिड़ियाँ तनिक न सकुचे। सीधे दादी माँ के घर पहुँचे। चिंतित दादी बैठी मुँह लटकाए। बुरे विचार मन में आए। चिंकी की आँखों में आँसू थे। उदास हो रहे चुसकू-मुसकू थे। दादी माँ का चरखा शांत। सबका मन हो रहा क्लांत।

अचानक कलरव हुआ आँगन में। सबने देखा आनन-फानन में। चिंचिया रहे थे पक्षी बहुत सारे। उनमें थे नीलू-टीनू-मीनू प्यारे। विचित्र हाल उनका देखा। अनेक थे, पर था उनमें एका। एक साथ आँगन में उतरे। मानो वे मित्र हों गहरे। चिंकी उधर पहुँची। दादी माँ ने की गरदन ऊँची। खटिया पर बैठी थी वह भोली। देख, उन्हें वह यों बोली, ''बहुत देर से आई हो नीलू आज। खैरियत तो है, क्या हुआ था काज ?''

नीलू ने हाल सुनाया। दादी माँ को सब बतलाया। यों पहुँची पंछियों की टोली। दादी माँ हँसीं और बोलीं, ''टीनू-मीनू हैं समझदार। तभी तो किया खबरदार ! जान तुम्हारी बच गई है। यही अच्छी बात हुई है।'' ''सच है जान हमारी बची। पर अब भी हैं जाल में फँसी। तनिक हमें सँभालो। इससे बाहर निकालो।''

दादी माँ तब मुसकाईं। राज की बात उन्हें बताईं।

❑ विद्यार्थियों से कहानी में आए लयात्मक शब्द खोजवाकर लिखवाएँ। इन शब्दों को लेकर नए शब्द, वाक्य बनाने के लिए प्रेरित करें। ध्वन्यात्मक शब्दों के बारे में चर्चा करें। जैसे-कल-कल, टप-टप आदि। मुहावरों-कहावतों का अर्थ समझाएँ और उनकी सूची बनवाएँ।

मेरी कलम से

निम्नलिखित शब्दों के आधार पर एक कहानी लिखो : पानी, पुस्तक, बिल्ली, राखी ।

उँगली उठाकर बोलीं, ''काम करेगी एकता की गोली । बच्चो, उसमें ही शक्ति है । वही बचने की युक्ति है । वह तुम्हें बचाएगी । जाल से मुक्त कराएगी ।'' नीलू बोली, मीठी बोली, ''हम एक हैं, पर क्या करें ? बच जाएँ, कुछ ऐसा जतन करें ।''

दादी माँ ने समझाया । फिर से एकता का पाठ पढ़ाया । वह बोलीं, ''एकता पंछियों की ही नहीं, औरों में भी होनी चाहिए वही । यह बात सदैव ध्यान में रखते, एक और एक ग्यारह होते । किसी तरह की तुम झिझक न करो । चिंकी से तनिक याचना करो । वह तुम्हें बंधन से बचाएगी । जाल काट, बाहर ले आएगी ।'' टीनू-मीनू ने कहा, ''हम आजाद हो रहे, अहा ! मौसी, चुसकू-मुसकू को बुलाओ । सब मिलकर हमें बचाओ ।'' यही बात नीलू ने कही । भेद किया किसी ने नहीं । बात चिंकी के मन को भाई । दौड़-भाग, झटपट आई । दादी यों बोलीं, ''मिलकर रहो हमजोली । एक रहोगे तुम सब । हार नहीं मिलेगी तब ।''

चिंकी गई, जाल के पास । चुसकू-मुसकू भी थे आसपास । पैने दाँतों से काटा जाल । आजाद हुए सब तत्काल । चिड़े-चिड़ियाँ चिंचिया रहे । दादी माँ से बतिया रहे । टीनू-मीनू, चुसकू-मुसकू खेलने लगे । सब थे प्रेम-स्नेह में पगे । दादी माँ की सीख रंग लाई । सबने दी एकता की दुहाई । सबका एक साथ मुँह खुला- 'अंत भला तो सब भला' ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

निपट = केवल, मात्र
आबाद = भरा-पूरा
बुहारना = स्वच्छ करना
दीन-दुनिया = संसार
खलिहानी = कटी फसल रखने का स्थान
क्लांत = थका हुआ
कलरव = पंछियों की मधुर ध्वनि
आनन-फानन में = शीघ्रता से

मुहावरे

तुनककर बोलना = चिढ़कर बोलना
अक्ल का पत्ता खोलना = तरकीब बताना
ठगा-सा रहना = चकित होना

कहावतें

एक और एक ग्यारह = एकता में बल
अंत भला तो सब भला = परिणाम अच्छा तो सब अच्छा

अध्ययन कौशल

अपने और किसी पड़ोसी राज्य के राष्ट्रीय अभयारण्यों की शासकीय वीडियो क्लिप्स, फिल्म्स आदि देखकर वर्गीकरण करो एवं टिप्पणी बनाओ :

राज्य का नाम

अभयारण्य का नाम

विशेषताएँ

विचार मंथन

।। वृक्षवल्ली आम्हां सोयरे वनचरे ।।

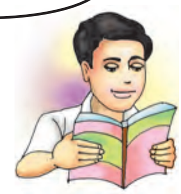

वाचन जगत से

स्वामी विवेकानंद का कोई भाषण पढ़ो और प्रमुख वाक्य बताओ ।

सदैव ध्यान में रखो

संगठन में ही शक्ति है, इसे जीवन में उतारो ।

१. घटना के अनुसार क्रम लगाकर लिखो :

(क) चिंकी ने भी दो बेटों का उपहार दिया ।

(ख) एक साथ उड़ने को रहेंगे तैयार ।

(ग) टीनू-मीनू , चुसकू-मुसकू खेलने लगे ।

(घ) घर के आँगन में बरगद का पेड़ था ।

२. एक-दो वाक्यों में उत्तर लिखो :

(च) चिड़िया कहाँ रहती थी ?

(छ) बहेलिया कब ठगा-सा रह गया ?

(ज) दादी माँ सुबह उठकर क्या करतीं ?

(झ) चुसकू-मुसकू ने किससे जाल काटा ?

L1YL6L

भाषा की ओर

निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर वाक्य में प्रयोग करके लिखो :